मेरा सहज जीवन

अहो चैतन्य आनन्दमय, सहज जीवन हमारा है।
अनादि अनंत पर निरपेक्ष, ध्रुव जीवन हमारा है॥टेक॥

हमारे में न कुछ पर का, हमारा भी नहीं पर में।
द्रव्य दृष्टि हुई सच्ची, आज प्रत्यक्ष निहारा है॥१॥

अनंतों शक्तियाँ उछलें, सहज सुख ज्ञानमय विलसें।
अहो प्रभुता परम पावन, वीर्य का भी न पारा है॥२॥

नहीं जन्मू नहीं मरता, नहीं घटता नहीं बढ़ता।
अगुरूलघु रूप ध्रुव ज्ञायक, सहज जीवन हमारा है॥३॥

सहज ऐश्वर्य मय मुक्ति, अनंतों गुण मयी ऋद्धि।
विलसती नित्य ही सिद्धि, सहज जीवन हमारा है॥४॥

किसी से कुछ नहीं लेना, किसी को कुछ नहीं देना।
अहो निश्चिंत 'परमानन्द' मय जीवन हमारा है॥५॥

ज्ञानमय लोक है मेरा, ज्ञान ही रूप है मेरा।
परम निर्दोष समता मय, ज्ञान जीवन हमारा है॥६॥

मुक्ति में व्यक्त है जैसा, यहाँ अव्यक्त है वैसा।
अबद्धस्पृष्ट अनन्य, नियत जीवन हमारा है॥७॥

सदा ही है न होता है, न जिसमें कुछ भी होता है।
अहो उत्पाद व्यय निरपेक्ष, ध्रुव जीवन हमारा है॥८॥

विनाशी बाह्य जीवन की, आज ममता तजी झूठी।
रहे चाहे अभी जाये, सहज जीवन हमारा है॥९॥

नहीं परवाह अब जग की, नहीं है चाह शिवपद की।
अहो परिपूर्ण निष्पृह ज्ञान, मय जीवन हमारा है॥१०॥

जिन भक्ति

घड़ी जिनराज दर्शन की, हो आनंदमय हो मंगलमय,
घड़ी यह सत्समागम की, हो आनंदमय हो मंगलमय।

अहो प्रभु भक्ति जिनपूजा, और स्वाध्याय तत्त्व-निर्णय,
भेद-विज्ञान स्वानुभूति, हो आनंदमय हो मंगलमय।

असंयम भाव का त्यागन, सहज संयम का हो पालन,
अनूपम शान्त जिन-मुद्रा, हो आनंदमय हो मंगलमय।

क्षमादिक धर्म स्वाश्रय से, सहज वर्ते सदा वर्ते,
परम निर्ग्रन्थ मुनि जीवन, हो आनंदमय हो मंगलमय।

हो अविचल ध्यान आतम का, कर्म बंधन सहज छूटें,
अचल ध्रुव सिद्ध पद प्रगटे, हो आनंदमय हो मंगलमय।

४. परम उपकारी जिनवाणी...

परम उपकारी जिनवाणी, सहज ज्ञायक बताया है।
हुआ निर्भार अन्तर में, परम आनन्द छाया है ॥टेक॥

अहो परिपूर्ण ज्ञाता रूप, प्रभु अक्षय विभवमय हूँ।
सहज ही तृप्त निज में ही, न बाहर कुछ सुहाया है॥१॥

उलझकर दुर्विकल्पों में, बीज दुख के रहा बोता।
ज्ञान आनन्दमय अमृत, धर्म माता पिलाया है ॥२॥

नहीं अब लोक की चिन्ता, नहीं कर्मों का भय किंचित।
ध्येय निष्काम ध्रुव ज्ञायक, अहो दृष्टि में आया है॥३॥

मिटी भ्रान्ति मिली शान्ति, तत्त्व अनेकान्तमय जाना।
सार वीतरागता पाकर, शीश सविनय नवाया है ॥४॥

समता षोडसी

समता रस का पान करो, अनुभव रस का पान करो।
शान्त रहो शान्त रहो, सहज सदा ही शान्त रहो॥टेक॥

नहीं अशान्ति का कुछ कारण, ज्ञान दृष्टि से देख अहो।
क्यों पर लक्ष करे रे मूरख, तेरे से सब भिन्न अहो॥१॥

देह भिन्न है कर्म भिन्न हैं, उदय आदि भी भिन्न अहो।
नहीं अधीन हैं तेरे कोई, सब स्वाधीन परिणमित हो॥२॥

पर नहीं तुझसे कहता कुछ भी, सुख दुख का कारण नहीं हो।
करके मूढ़ कल्पना मिथ्या, तू ही व्यर्थ आकुलित हो॥३॥

इष्ट अनिष्ट न कोई जग में, मात्र ज्ञान के ज्ञेय अहो।
हो निरपेक्ष करो निज अनुभव, बाधक तुमको कोई न हो॥४॥

तुम स्वभाव से ही आनंद मय, पर से सुख तो लेश न हो।
झूठी आशा तृष्णा छोड़ो, जिन वचनों में चित्त धरो॥५॥

पर द्रव्यों का दोष न देखो, क्रोध अग्नि में नहीं जलो।
नहीं चाहो अनुरूप प्रवर्तन, भेद ज्ञान ध्रुव दृष्टि धरो॥६॥

जो होता है वह होने दो, होनी को स्वीकार करो।
कर्त्तापन का भाव न लाओ, निज हित का पुरुषार्थ करो॥७॥

दया करो पहले अपने पर, आराधन से नहीं चिगो।
कुछ विकल्प यदि आवे तो भी, सम्बोधन समतामय हो॥८॥

यदि माने तो सहज योग्यता, अहंकार का भाव न हो।
नहीं माने भवितव्य विचारो, जिससे किंचित् खेद न हो॥९॥

हीन भाव जीवों के लखकर, ग्लानि भाव नहीं मन में हो।
कर्मोदय की अति विचित्रता, समझो स्थितिकरण करो॥१०॥

अरे कलुषता पाप बंध का, कारण लखकर त्याग करो।
आलस छोड़ो बनो उद्यमी, पर सहाय की चाह न हो॥११॥

पापोदय में चाह व्यर्थ है, नहीं चाहने पर भी हो।
पुण्योदय में चाह व्यर्थ है, सहजपने मन वांछित हो॥१२॥

आर्तध्यान कर बीज दुख के, बोना तो अविवेक अहो।
धर्म ध्यान में चित्त लगाओ, होय निर्जरा बंध न हो॥१३॥

करो नहीं कल्पना असम्भव, अब यथार्थ स्वीकार करो।
उदासीन हो पर भावों से सम्यक् तत्व विचार करो॥१४॥

तजो संग लौकिक जीवों का, भोगों के अधीन न हो।
सुविधाओं की दुविधा त्यागो, एकाकी शिव पंथ चलो॥१५॥

अति दुर्लभ अवसर पाया है, जग प्रपंच में नहीं पड़ो।
करो साधना जैसे भी हो, यह नर भव अब सफल करो॥१६॥

શ્રી નંદીશ્વરદ્વીપનાં જિનબિંબની આરતી

જય બાવન જિન દેવા, પ્રભુ બાવન જિન દેવા;
આરતી કરું તુમ ચરણે (૨)
ભવ જલ નદી નાવા, જયદેવ જયદેવ....ટેક.

અષ્ટમ શોભે દ્વીપ, નંદીશ્વર નામા (૨)
પ્રતિદિશ તેરહ તેરહ, અકૃત્રિમ જિનધામા....જયદેવ. ૧

અંજન ભૂધર એક, દધિમુખ નગ ચાર (૨)
ગજમતિ રતિકર પર્વત, તેરહ ગિરિ સાર...જયદેવ. ૨

એવં ચૌદિશિ બાવન, પૃથ્વીવર લંબા (૨)
ગિરિપતિ જયેષ્ઠ જિનાલય, મણિમય જિનબિંબા...જયદેવ. ૩

શુભ અષાડે કાર્તિક, ફાલ્ગુન સુદી પક્ષા (૨)
ઈન્દ્રાદિક કરે પૂજા, અષ્ટાહ્નિક દક્ષા...જયદેવ. ૪

અષ્ટમ દિનથી મંડિત, પૂનમ પર્યંતા (૨)
જિન ગુણ સાગર ગાવે, પાવે સુરકાન્તા...જયદેવ. ૫